[नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत CBSE द्वारा जारी नवीनतम पाठ्यक्रम एवं NCERT द्वारा जारी नवीनतम पाठ्यपुस्तकों पर आधारित]

संजीव रिफ्रेशर

संस्कृत

रुचिरा (द्वितीयो भागः)

कक्षा 7 के विद्यार्थियों के लिए

मुख्य विशेषताएँ

- पाठ परिचय
- मूल पाठ, अन्वय, कठिन शब्दार्थ एवं हिन्दी अनुवाद
- पठित अवबोधनम्
- पाठ्यपुस्तक के सभी प्रश्न
- अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न
- व्याकरण
- रचनात्मक कार्य
- अपठित—अवबोधनम्

प्रकाशक :

संजीव प्रकाशन

जयपुर

मूल्य :
₹ 200.00

प्रकाशक :
संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,
जयपुर-3
email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
website : www.sanjivprakashan.com

© प्रकाशकाधीन

लेजर टाइपसैटिंग :
संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

★ ★ ★ ★

- इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं—
  email : sanjeevcompetition@gmail.com
  पता : प्रकाशन विभाग, संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर
  आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।
- इस पुस्तक के किसी भी अंश का पुनरुत्पादन या किसी प्रणाली के सहारे पुनर्प्राप्ति का प्रयास अथवा किसी भी तकनीक या तरीके—इलेक्ट्रोनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या वेब माध्यम से प्रकाशक की अनुमति के बिना प्रकाशन या वितरण नहीं किया जा सकता है।
- हमने अपने प्रयास से इस पुस्तक के तथ्यों तथा विवरणों को उचित स्रोतों से प्राप्त किया है। इस पुस्तक में प्रकाशित किसी भी सूचना की सत्यता या त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।
- सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

विषय-सूची

प्रथमः खण्डः

रुचिरा (द्वितीयो भागः)

1.	सुभाषितानि	1-11
2.	दुर्बुद्धिः विनश्यति	12-23
3.	स्वावलम्बनम्	24-33
4.	पण्डिता रमाबाई	34-44
5.	सदाचारः	45-55
6.	सङ्कल्पः सिद्धिदायकः	56-69
7.	त्रिवर्णः ध्वजः	70-79
8.	अहमपि विद्यालयं गमिष्यामि	80-91
9.	विश्वबन्धुत्वम्	92-101
10.	समवायो हि दुर्जयः	102-111
11.	विद्याधनम्	112-122
12.	अमृतं संस्कृतम्	123-133
13.	लालनगीतम्	134-146

द्वितीयः खण्डः

व्याकरण-भागः

1.	वर्णविचारः	147-151
2.	सन्धि-प्रकरणम्	151-159
3.	कारक-प्रकरणम्	159-168
4.	शब्द-रूपाणि	168-184

5.	धातुरूपाणि	184–197
6.	अव्यय–ज्ञानम्	197–202
7.	उपसर्ग–ज्ञानम्	202–207
8.	प्रत्ययज्ञानम्	207–216
9.	संख्याज्ञानम्	216–225
10.	अशुद्धि–संशोधनम्	225–233
11.	अनुवाद–प्रकरणम्	233–244

तृतीयः खण्डः

रचना–भागः

1.	चित्राधारित–वर्णनम्	245–251
2.	अनुच्छेद/निबन्ध–लेखनम्	251–256
3.	पत्र–लेखनम्	256–265
4.	संवाद–लेखनम्	265–269
●	अपठित–अवबोधनम्	270–275
●	परिशिष्ट भागः	276–280

कक्षा-7 संस्कृत

प्रथमः खण्डः

रुचिरा (द्वितीयो भागः)

प्रथमः पाठः

1

सुभाषितानि
(सुन्दर वचन)

पाठ-सार–संस्कृत-साहित्य सुभाषितों का भण्डार है। प्रस्तुत पाठ में अत्यन्त सरल एवं महत्त्वपूर्ण कुल छः श्लोक हैं, जिनमें जीवनोपयोगी सुन्दर-वचन संकलित हैं।

प्रथम श्लोक में सुभाषित (सुन्दर-वचन) का महत्त्व बतलाते हुए कहा गया है कि इस संसार में जल, अन्न और सुभाषित—ये ही तीन रत्न हैं। मोती, पन्ना आदि पत्थरों के टुकड़ों को रत्न मानना तो मूर्खता है।

द्वितीय श्लोक में सत्य का महत्त्व दर्शाया गया है। इस सुभाषित में कहा गया है कि सत्य से ही पृथ्वी स्थित है, सत्य से ही सूर्य तपता है तथा सम्पूर्ण संसार सत्य पर ही स्थित है।

तृतीय श्लोक में कहा गया है कि इस पृथ्वी पर दान, तप, शौर्य आदि अनेक रत्न हैं जो परमात्मा द्वारा प्रदत्त हैं।

चतुर्थ श्लोक में सज्जनों का महत्त्व बतलाते हुए उन्हीं के साथ बैठने, रहने एवं मित्रता करने की प्रेरणा दी गई है।

पंचम श्लोक में कहा गया है कि मनुष्य को ज्ञान के संग्रह, आहार-व्यवहार के विषय में संकोच नहीं करना चाहिए।

पाठ के अन्तिम एवं **छठे** श्लोक में क्षमा का महत्त्व दर्शाते हुए कहा गया है कि जिसके पास क्षमा रूपी शस्त्र है, उसका दुष्ट व्यक्ति कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता है।

मूलपाठस्य अवबोधनम्–(अन्वय, शब्दार्थ, हिन्दी-अनुवाद, भावार्थ एवं पठितावबोधनम्)

(1)

पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम्।
मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते।। 1।।

अन्वयः–पृथिव्यां जलम् अन्नं सुभाषितम् त्रीणि रत्नानि (सन्ति)। मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते।

कठिन-शब्दार्थाः–**पृथिव्याम्** = पृथ्वी पर (On the earth)। **त्रीणि** = तीन (Three)। **अन्नम्** = अन्न (Food)। **सुभाषितम्** = सुन्दर वचन (Good saying)। **मूढैः** = मूर्ख लोगों के द्वारा (By fools)। **पाषाणखण्डेषु** = पत्थर के टुकड़ों में (In the stones)। **रत्नानि** = रत्न (Gems)। **विधीयते** = किया जाता है (Given/to be done)।

हिन्दी अनुवाद–धरती पर तीन रत्न हैं—जल, अन्न और सुन्दर वचन। मूर्खों के द्वारा ही पत्थर के टुकड़ों में 'रत्न' नाम समझा जाता है।

भावार्थ–प्रस्तुत श्लोक में वास्तविक रूप से रत्न क्या हैं, इसके बारे में कहा गया है कि सभी के लिए लाभदायक एवं उपयोगी जल, अन्न और सुन्दर वचन—ये तीन ही इस पृथ्वी पर रत्न हैं। हीरे आदि पत्थर के टुकड़ों को तो मूर्ख लोग ही रत्न नाम से कहते हैं। अर्थात् मूर्ख रत्न के वास्तविक महत्त्व को नहीं जानते हैं।

पठितावबोधनम्–

निर्देशः–उपर्युक्तं श्लोकं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नानाम् उत्तराणि यथानिर्देशं लिखत—

प्रश्नाः–

I. एकपदेन उत्तरत–

(i) पृथिव्यां कति रत्नानि सन्ति?

(ii) कैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते?

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

पृथिव्यां कानि रत्नानि सन्ति?

III. निर्देशानुसारम् उत्तरत्–

(i) 'त्रीणि' इति विशेषणपदस्य श्लोके विशेष्यपदं किम् प्रयुक्तम्?

(अ) रत्नानि (ब) मूढैः (स) पृथिव्यां (द) जलमन्नम्

(ii) 'मूढैः' इति कर्तृपदस्य श्लोके क्रियापदं किमस्ति?

(अ) क्रियते (ब) गम्यते (स) विधीयते (द) वर्तते

(iii) 'पृथिव्याम्' इति पदे का विभक्तिः?

(अ) द्वितीया (ब) चतुर्थी (स) षष्ठी (द) सप्तमी

(iv) 'विधीयते' इति क्रियापदे कः लकारः?

(अ) लोट्लकारः (ब) लट्लकारः (स) लङ्लकारः (द) लृट्लकारः

उत्तराणि– I. (i) त्रीणि। (ii) मूढैः।

II. पृथिव्यां जलम्, अन्नम्, सुभाषितं चेति त्रीणि रत्नानि सन्ति।

III. (i) (अ) रत्नानि। (ii) (स) विधीयते।

(iii) (द) सप्तमी। (iv) (ब) लट्लकारः।

(2)

सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रविः।
सत्येन वाति वायुश्च सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्।। 2।।

अन्वयः–पृथ्वी सत्येन धार्यते। रविः सत्येन तपते। वायुश्च सत्येन वाति। सत्ये सर्वं प्रतिष्ठितम्।

कठिन-शब्दार्थाः–धार्यते = धारण किया जाता है (Bears)। **रविः** = सूर्य (The sun)। **तपते** = जलता है (Burns)। **वाति** = बहती है (Flows/Blows)। **सर्वम्** = सबकुछ (everything)। **प्रतिष्ठितम्** = स्थित है (Exists)। **सत्येन** = सत्य से (by the truth)।

हिन्दी अनुवाद–धरती सत्य के द्वारा ही धारण की जाती है, सूर्य सत्य के द्वारा तपता है और वायु भी सत्य से ही बहती है, सब कुछ (सम्पूर्ण संसार) सत्य में ही स्थित है।

भावार्थ–प्रस्तुत श्लोक में सत्य के महत्त्व का वर्णन करते हुए कहा गया है कि सत्य से ही पृथ्वी धारण की जाती है, सत्य से ही सूर्य तपता है, सत्य से ही वायु बहती है तथा संसार में जो भी कुछ है वह सब सत्य पर ही निर्भर है।

पठितावबोधनम्–

प्रश्नाः–

I. एकपदेन उत्तरत–

(i) रविः केन तपते?

(ii) सत्येन का धार्यते?

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

सर्वं कुत्र प्रतिष्ठितम्?

III. निर्देशानुसारं उत्तरत–

(i) 'सत्येन..... वायुः?' उचितक्रियापदेन रिक्तस्थानं पूरयत।

(अ) तपते (ब) वाति (स) धार्यते (द) प्रतिष्ठितम्

(ii) 'प्रतिष्ठितम्' इति पदे उपसर्गः कः?

(अ) स्था (ब) तम् (स) प्र (द) प्रति

(iii) 'सूर्यः' इति पदस्य श्लोके पर्यायपदं किम्?

(अ) रविः (ब) भानुः (स) दिनकरः (द) आदित्यः

(iv) 'असत्ये' इति पदस्य श्लोके विलोमपदं किमस्ति?

(अ) तपते (ब) वायुः (स) सत्ये (द) रविः

उत्तराणि– I. (i) सत्येन। (ii) पृथ्वी।

II. सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्।

III. (i) (ब) वाति। (ii) (द) प्रति।

(iii) (अ) रविः। (iv) (स) सत्ये।

(3)

दाने तपसि शौर्ये च विज्ञाने विनये नये।
विस्मयो न हि कर्त्तव्यो बहुरत्ना वसुन्धरा।। 3।।

अन्वयः–दाने तपसि शौर्ये विज्ञाने विनये नये च विस्मयः न कर्त्तव्यः। हि वसुन्धरा बहुरत्ना (वर्तते)।

कठिन-शब्दार्थाः–दाने = दान में (charity/donation)। **शौर्ये** = बल में (In strength)। **नये** = नीति में (In morality)। **विस्मयः** = आश्चर्य (surprise)। **वसुन्धरा** = पृथ्वी (the Earth)। **बहुरत्ना** = अनेक रत्नों वाली (With various jewels)। **तपसि** = तपस्या में (in penance)। **विनये** = विनम्रता में (In humility)।

हिन्दी अनुवाद–दान में, तपस्या में, बल में, विज्ञान में, विनम्रता में और नीति में आश्चर्य नहीं करना चाहिए, क्योंकि पृथिवी अनेक रत्नों वाली है।

भावार्थ–प्रस्तुत श्लोक में 'बहुरत्ना वसुन्धरा' इस सूक्ति के द्वारा स्पष्ट किया गया है कि यह भूमि अनेक रत्नों वाली है। यहाँ एक से बढ़कर एक दानी, तपस्वी, बलशाली, वैज्ञानिक, विनम्र तथा नीतिज्ञ हैं, अतः इनके कार्य दान, तपस्या आदि में आश्चर्य नहीं करना चाहिए। ये सभी इस पृथ्वी के अमूल्य रत्न हैं।

पठितावबोधनम्–

प्रश्नाः–

I. एकपदेन उत्तरत–

(i) बहुरत्ना का वर्तते?

(ii) दाने कः न कर्त्तव्यः?

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

कुत्र-कुत्र विस्मयः न कर्त्तव्यः?

III. निर्देशानुसारम् उत्तरत–

(i) 'विज्ञाने' इति पदे कः उपसर्गः?

(अ) वि (ब) ज्ञा (स) नी (द) आ

(ii) 'पृथ्वी' इत्यर्थे श्लोके किं पदम् अस्ति?

(अ) भूमिः (ब) नये (स) वसुन्धरा (द) भूः

(iii) 'तपसि' इति पदे का विभक्तिः?

(अ) द्वितीया (ब) तृतीया (स) पंचमी (द) सप्तमी

(iv) 'कर्त्तव्यः' इति पदे मूलधातुः का?

(अ) कतृ (ब) कृ (स) तव्य (द) क्री

उत्तराणि– I. (i) वसुन्धरा। (ii) विस्मयः।

II. दाने तपसि शौर्ये विज्ञाने विनये नये च विस्मयः न कर्त्तव्यः।

III. (i) (अ) वि। (ii) (स) वसुन्धरा।

(iii) (द) सप्तमी। (iv) (ब) कृ।

(4)

सद्भिरेव सहासीत सद्भिः कुर्वीत सङ्गतिम्।
सद्भिर्विवादं मैत्रीं च नासद्भिः किञ्चिदाचरेत्।। 4।।

अन्वयः–सद्भिः सह इव आसीत। सद्भिः सङ्गतिं कुर्वीत। सद्भिः (सह) विवादं मैत्रीं च (कुर्वीत)। असद्भिः (सह) किञ्चिद् न आचरेत्।

कठिन-शब्दार्थाः–**सद्भिः सह** = सज्जनों के साथ (With good people)। **आसीत** = बैठना चाहिए (should sit)। **सङ्गतिम्** = साथ (the company)। **कुर्वीत** = करना चाहिए (should do)। **विवादम्** = तर्क-वितर्क (Argument/ Debate)। **मैत्रीम्** = मित्रता (friendship)। **किञ्चित्** = कुछ (anything)। **असद्भिः सह** = दुष्टों के साथ (with evil people)। **आचरेत्** = आचरण करना चाहिए (should deal)।

हिन्दी अनुवाद–सज्जनों के साथ ही बैठना चाहिए, सज्जनों के साथ ही संगति करनी चाहिए, सज्जनों के साथ ही झगड़ा अथवा मित्रता करनी चाहिए, किन्तु असज्जन अर्थात् दुष्ट लोगों के साथ किसी भी प्रकार का आचरण नहीं करना चाहिए।

भावार्थ–प्रस्तुत श्लोक में सत्संगति के महत्त्व को दर्शाते हुए कहा गया है कि सज्जनों के साथ ही रहना चाहिए, सज्जनों के साथ ही संगति करनी चाहिए तथा सज्जनों के साथ ही मित्रता अथवा विवाद करना चाहिए, किन्तु दुर्जनों के साथ किसी भी प्रकार का व्यवहार नहीं रखना चाहिए, सज्जनों का साथ हर प्रकार से लाभदायक होता है, किन्तु दुर्जनों की संगति सर्वथा हानिकारक ही होती है।

पठितावबोधनम्–

प्रश्नाः–

I. एकपदेन उत्तरत–

(i) कैः सह सङ्गतिं कुर्वीत?

(ii) कैः सह किञ्चिद् न आचरेत्?

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

विवादं मैत्री च कैः सह कुर्वीत?

III. निर्देशानुसारम् उत्तरत–

(i) 'सद्भिरेव सहासीत'–इत्यत्र क्रियापदं किम्?

(अ) आसीत (ब) सह (स) सद्भिः (द) एव

(ii) 'आचरेत्' इति पदे कः लकारः?

(अ) लट् (ब) लोट् (स) विधिलिङ् (द) लृट्

(iii) 'सद्भिः' इति पदस्य श्लोकात् विलोमपदं चित्वा लिखत।

(अ) कुर्वीत (ब) मैत्री (स) विवादम् (द) असद्भिः

(iv) 'सद्भिः' इति पदे का विभक्तिः?

(अ) द्वितीया (ब) तृतीया (स) चतुर्थी (द) पंचमी

उत्तराणि– I. (i) सद्भिः। (ii) असद्भिः।

II. विवादं मैत्री च सद्भिः सह कुर्वीत।

III. (i) (अ) आसीत। (ii) (स) विधिलिङ्।

(iii) (द) असद्भिः। (iv) (ब) तृतीया।

(5)

धनधान्यप्रयोगेषु विद्यायाः संग्रहेषु च।
आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्।। 5।।

अन्वयः—धनधान्यप्रयोगेषु विद्यायाः संग्रहेषु च आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्।

कठिन-शब्दार्थाः—धनधान्यप्रयोगेषु = धन और धान्य के प्रयोग में (while spending money and food)। **संग्रहेषु** = इकट्ठा करने में (in collecting)। **आहारे** = भोजन में (in eating)। **व्यवहारे** = व्यवहार में (in dealings)। **त्यक्तलज्जः** = संकोच को छोड़कर (without shyness)। **भवेत्** = होना चाहिए (should be)।

हिन्दी अनुवाद—धन और धान्य के प्रयोग में, विद्या का संग्रह करने में, भोजन में और व्यवहार में संकोच या भीरुता को छोड़कर सुखी होना चाहिए।

भावार्थ—प्रस्तुत श्लोक में संकोच अथवा लज्जा कहाँ नहीं करनी चाहिए, इसका सदुपदेश देते हुए कहा गया है कि धन-धान्य के प्रयोग में, विद्या-प्राप्ति में, भोजन में तथा व्यवहार में संकोच या लज्जा को छोड़ देना चाहिए, जिससे व्यक्ति सुखी हो जाता है। इनमें लज्जा करने से व्यक्ति को कष्ट उठाना पड़ता है। जैसे भोजन के समय संकोच करने से व्यक्ति भूखा ही रह जाता है।

पठितावबोधनम्—

प्रश्नाः—

I. एकपदेन उत्तरत—

(i) कस्याः संग्रहेषु लज्जा न करणीया?

(ii) त्यक्तलज्जः कीदृशः भवति?

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत—

केषु त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्?

III. निर्देशानुसारम् उत्तरत—

(i) 'त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्'—इत्यत्र क्रियापदं किम्?

(अ) भूयात् (ब) भवतु (स) भवेत् (द) त्यजेत्

(ii) 'दुःखी' इति पदस्य श्लोकात् विलोमपदं चित्वा लिखत।

(अ) सुखी (ब) प्रसन्नः (स) लज्जः (द) आहारे

(iii) 'संग्रहेषु' इति पदे कः उपसर्गः?

(अ) सु (ब) सम् (स) सह (द) ग्रह्

(iv) 'विद्यायाः' इति पदे का विभक्तिः?

(अ) द्वितीया (ब) चतुर्थी (स) सप्तमी (द) षष्ठी

उत्तराणि— I. (i) विद्यायाः। (ii) सुखी।

II. धनधान्यप्रयोगेषु विद्यायाः संग्रहेषु च आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्।

III. (i) (स) भवेत्। (ii) (अ) सुखी।

(iii) (ब) सम्। (iv) (द) षष्ठी।

(6)

क्षमावशीकृतिर्लोके क्षमया किं न साध्यते।
शान्तिखड्गः करे यस्य किं करिष्यति दुर्जनः।। 6।।

अन्वयः—लोके क्षमा वशीकृतिः। क्षमया किं न साध्यते। यस्य करे शान्तिखड्गः (अस्ति), दुर्जनः (तस्य) किं करिष्यति?

कठिन-शब्दार्थाः—लोके = संसार में (in world)। **क्षमा** = क्षमा (forgiveness)। **क्षमया** = क्षमा के द्वारा (By forgiveness)। **साध्यते** = सिद्ध होता है (is achieved)। **यस्य** = जिसके। **करे** = हाथ में (in hand)। **शान्ति खड्गः** = शान्ति रूपी तलवार (the sword of peace)। **दुर्जनः** = दुष्ट व्यक्ति (wicked person)। **करिष्यति** = करेगा (will do)।